E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
Impact Factor: RJIF 5.12
IJAAS 2020; 2(1): 268-269
Received: 13-11-2019
Accepted: 20-12-2019

माला कुमारी
शोध प्रज्ञा,
विश्वविद्यालय–हिन्दी–विभाग,
ल०ना० मिथिला विश्वविद्यालय,
दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
माला कुमारी
शोध प्रज्ञा,
विश्वविद्यालय–हिन्दी–विभाग,
ल०ना० मिथिला विश्वविद्यालय,
दरभंगा, बिहार, भारत

असगर वजाहत की कहानियाँ एक समसामयिक चेतना

माला कुमारी

सारांशः
असगर वजाहत अपनी लेखन कला से युग की विभीषिका को चिन्हित करते हुए आगे बढ़ते हैं। समय की पतनशीलता एवं उसकी भयावहता इनकी कहानियों का उपजीव्य रहा है। अपनी कहानियों में यथार्थ को निर्ममता से उघेड़ते हुए भी असगर वजाहत संभावनाओं का रास्ता पाठकों के लिए छोड़ते हैं यह उनकी प्रमुख विशेषता रही है। इनकी कहानियों में समाज का हर तबका अपनी–अपनी विशिष्टाओं के साथ मौजुद है। ये विभिन्न तरह की विशिष्टता (गुण–अवगुण) ही इनकी कहानियों में व्याप्त रहा है। राज और समाज की हर समस्याओं को इन्होंने अपनी कहानियों में स्थान दिया है। जो असगर वजाहत जी की प्रमुख विशेषता रही है।

प्रस्तावनाः
असगर वजाहत एक उच्च कोटि के रचनाकार हैं। जो भारतवर्ष के उस सच्चाई को दर्शाते हैं जहाँ राजनीतिक खेल रहस्यमयी है, जहाँ शिक्षा का पतन हो चुका है। स्वतंत्र भारत की राजनीतिक, सांस्कृतिक और धार्मिक विकृतियों को नंगा करने में असगर वजाहत जी की रचनाओं ने अगाढ़ सफलता पाई है। अपने समकालीन कहानीकारों में असगर वजाहत ने एक अभूतपूर्व सफलता पाई है। वजाहत जी एक ऐसे कहानिकार हैं जो अपने अनुसार विषय को चुनते व वरन विषय के अनुसार खुद को चुनते हैं। तात्पर्य उनकी रचनाएँ समय के साथ कदम से कदम मिलाकर सत्य का उद्घाटन करती है। वजाहत जी की कहानियों में केन्द्रीय विषय राजनीति, समाज में व्याप्त सच्चाई, धर्म के लाइलाज विकृत सवाल है, जिससे देश अवनति की ओर बढ़ता जा रहा है को मुख्य विषय बनाया है। असगर वजाहत अपने नाजुक समय के प्रति अपनी कलम की जबाबदेही सुनिश्चित करने वाले एक सफल कथाकार हैं। विचारधारा उनकी कहानियों में बनावटीपन के साथ नहीं है वरन चरित्रों, विषयों, घटनाओं की प्रस्तुती एक रस के रूप में होते हैं। जो देश के सजग, संवेदनशील और परिवर्तनकारी साहित्यकारों के लिए एक महत्त्वपूर्ण एवं आवश्यक सर्त के रूप में स्थापित है। असगर वजाहत हिन्दी के एक सफल रचनाकार हैं। समकालीन कहानी साहित्य में असगर वजाहत की एक खास पहचान है। उन्होंने देश–विदेश का काफी भ्रमण किया है। अपने देश के सामाजिक–राजनीतिक आदि विभिन्न विषयों की सही समझ उनमें विद्यमान है। उनका सामाजिक मान्यताओं में अटूट विश्वास है। असगर वजाहत ने समाज की इन्हीं संस्कृतियों को अपनी रचनाओं का आधार बनाया है। प्राकृतिक छवि से दूर उनकी दृष्टि राज और समाज में अधिक रमी है। जितनी रचनात्मकता उन्होंने साहित्य के क्षेत्र में किया है, उतना ही फिल्म, पटकथा लेखन, टेलिविजन और पेंटिंग में रहा है। लीक से हटकर अलग ढंग से सोचना और उसे अपनी रचनाओं में व्यक्त करना उनकी खासियत रही है।

असगर वजाहत ने अनेक विधाओं में रचनाएँ की है। इनकी कहानियों पर यदि बात की जाय तो सन् 1964–65ई. में इन्होंने लिखना आरंभ किया तब से लेकर आज तक पचास–पचपन साल की लम्बी कालावधि में इन्होंने अनेक कहानियाँ लिखी है।

वजाहत जी ने सांप्रदायिकता और उससे जुड़े तत्त्वों को अपनी रचनाओं में मूलाधार बनाया है। अपनी रचनाओं में मुस्लिम संप्रदायिकता और उससे जुड़े तत्त्ववाद पर बारबार विचार करते हैं। ऐसा नहीं कहा जा सकता है कि जाति के तौर पर वे मुसलामन हैं, इसलिए इन मुद्दों को उठाते हैं, बल्कि अपनी अनेक कहानियों में हिन्दू सांप्रदायिकता और तत्त्ववाद की पड़ताल भी करते हैं। असगर वजाहत की एक महत्त्वपूर्ण कहानी है– 'सारी तालीमात', जिसे उन्होंने साम्प्रदायिकता को केन्द्र में रखकर लिखा है। इस कहानी के द्वारा समाज में व्याप्त सम्प्रदायिकरण की प्रक्रिया को समझा जा सकता है। कहानीकार ने इस कहानी के जरिये समाज में व्याप्त उस विकृति, अनदेखे, अनजाने चेहरे को सामने लाने का प्रयास किया है जो सर्वथा छुपा हुआ है, मगर आम जन इससे प्रभावित होते रहते हैं। 'सारी तालीमात' में समाज के अंदर की साम्प्रदायिक प्रक्रिया विचारों के पनपने, फैलने की प्रक्रिया को देखा और समझा जा सकता है। कहानी में धर्म के नाम पर गरीब लोगों के शोषण का उल्लेख है– ''हर दंगे के बाद हिन्दुओं के मोहल्ले के आसपास रहने वाले मुसलमान किसी

मुसलमानी मोहल्ले में आ जाते हैं ओर मुसलमानों की बस्ती के पास रहने वाले हिन्दू रस्तोगीगंज या रघुबीरपुर चले जाते हैं।''(1)
शहर में हर तीन–चार साल के बाद फसाद हो जाता है, अफवाहों का बाजार गर्म हो जाता है, गिरोह भी सक्रिय हो जाते हैं। पुलिस भी दंगों को रोकने के लिए कुछ नहीं करती– ''यही तो गड़बड़ है जिगर। पुलिस अगर किसी तरह से....''(2)
साम्प्रदायिकता विरोध प्रगतिशील जनवादी लेखन के लिए एक गंभीर विषय रहा है। बदलाव राजनीति में होता है, जिसका गहरा प्रभाव आम लोगों पर होता है। रोजमर्रा की जिंदगी में साम्प्रदायिकता का कहर कैसे फैलता है यह एक चिंताजनक विषय रहा है। साम्प्रदायिकता फैलने का सबसे महत्त्वपूर्ण कारण होता है अफवाह और पूर्वाग्रह। असगर वजाहत की कहानियाँ इस वजह से साथ पाठक को संस्कारित करता है, इससे पूर्वाग्रहों को कुरेदा जा सकता है और लोगों को एक संवेदनशील नागरिक बना सकता है। जिससे लोग एक मूक दर्शक न बनकर सक्रिय प्रतिरोध कर सके। असगर वजाहत ने 'गुरु चेला' जैसी छोटी कहानियों के मार्फत समाज में व्याप्त इस बुराई को दर्शाया है। जब चेला गुरु जी से पूछता है ''तो गुरुजी दंगे न रूकने का कारण क्या है? गुरु– साफ है शिष्य– आम लोग दंगे रूकवाने में कोई यचि नहीं लेते।''(3)
असगर वजाहत जी ने गुरु चेला संवाद नाम से अनेक छोटी–छोटी कहानियों के साथ–साथ मुश्किल काम, शाह आलम कैंप की रूहें, सारी तालिमात, मैं हिन्दू हूँ जैसी बड़ी–बड़ी कहानियाँ भी लिखी है। सर्वविदित है कि कहानी की सार्थकता इसी में है कि उसका आमजनों के जीवन में हस्तक्षेप कितना है। असगर वजाहत अपने लेखन से उस युग की विभीषिका को चिन्हित करते हुए आगे बढ़ते हैं जिसकी उपादेयता आजतक बनी हुई है। देश जब–जब संकट में आया है तो इसमें नेताओं की भूमिका और आमजनों की सोच को दर्शाते हुए अपनी कहानी मुश्किल काम में व्यंग्यात्मक रूप से लिखते हैं– ''बाढ़ग्रस्त क्षेत्र में उद्घाटन देखने हजारों लोग आए, क्योंकि घोषणा की गई थी कि उद्घाटन के बाद राशन भी मिलेगा।''(4)
वजाहत जी की कहानियाँ सिर्फ समाज में व्याप्त विकृतियों को ही नहीं दर्शाती है अपितु उससे जुझते हुए आगे बढ़ने का रास्ता भी दिखलाती है। जिसमें समाज का हर व्यक्ति सामिल होता है। फिर चाहे वो हिन्दु हो या मुस्लिम। असगर वजाहत समकालीन दौर के उन रचनाकारों में से है जो देश की संकिर्णताओं से परे समाज में व्याप्त मानवीय संवेदनाओं से हमें रू–ब–रू करवाते हैं। भाषायि अभिव्यक्ति भी वजाहत जी की सरल, बेबाक एवं किस्सागोई है, जिसे साधारण से साधारण पाठक भी आत्मसात करने में सक्षम है। अपनी इन्हीं खुबियों के कारण असगर वजाहत जी की रचनाएँ कथा–साहित्य में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान स्थापित करते हैं। आज समाज में लोग भले ही किसी को पहचानते न हो पर ईर्ष्या का भाव एक–दूसरे के लिए सर्वत्र व्याप्त है जो की हमारे समाज की एक विचित्र विडंबना है जो की लगभग लोगों में व्याप्त है वजाहत जी ने मानव के इस विचित्र भाव को दर्शाते हुए श्री टी.पी. देव की कहानियाँ कई भागों में लिखीं हैं उदाहणार्थ– ''मगर उन्हें यह मालूम नहीं था कि उनके पड़ोसी के पास कौन–सी कार है। उन्हें तो यह तक पता नहीं था कि उनका पड़ोसी कौन है और कहाँ रहता है, लेकिन उन्हें यह मालूम था कि ईर्ष्या क्या होती है।''(5)
मुख्यमंत्री एवं डेमोक्रेसिया, शाह आलम कैंम की रूहें, विकसित देश की पहचान, जिम्मेवारी आदि कई लघु कथाएँ एक श्रृंखला में लिखीं हैं। इन कहानियों में बिहार के कोसी में आई बाढ़ और उससे मुख्यमंत्री के राहत कार्य से वोट बैंक की राजनीति तक के चरित्र को उद्घाटित किया गया है।
''मीडिया ने मुख्यमंत्री से पूछा– ''हमने सुना है, आप केवल अपने वोटरों की लाशें ही निकालकर लाए हैं। मुख्यमंत्री ने कहा, अरे तो विरोधी दल वाले भी चले जाते कोसी की गोद में, अरे ये तो 'डेमोक्रेसिया' है।''(6)
मुख्यमंत्री और डेमोक्रेसिया में कहानीकार चुटीला व्यंग्य करता है। अकाल हो या बाढ़, स्टेम्पीड हो या दंगा मुख्यमंत्री खुश ही रहते हैं। भयानक बाढ़ से सर्वत्र सर्वनाश छाया हुआ है। महामारी लोगों का नाश कर रही है, मगर मुख्यमंत्री बहुत प्रसन्न हैं। किसी तरह की कोई परेशानी नहीं है– आप इसे परेशानी कहते हैं। हम तो कहते हैं सालभर भाढ़ रहे। जनता की सेवा करने का मौका मिलता रहे। मुख्यमंत्री कोष में पैसा आता रहे। इन कहानियों में विद्रूपताओं का बार–बार साक्षात्कार होता है। आज हमारे देश और समाज में ऐसी ही कहानियों की आवश्यकताएँ बार–बार महसूस होती है। असगर वजाहत के विचार और उनके कथ्य इन कहानियों के साथ तालमेल बैठाते हुए उससे जुझने की प्रेरणा प्रदान करता है। ये कहानियाँ लगातार इतिहास एवं वर्तमान का दर्शन कराती हुई भविष्य का निर्धारण करती है। इनकी भाषा सहज और वाक्य सरल है जो मुश्किल एवं जटिल विचारों को भी व्यक्त करने में सफल होती है।
निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि असगर वजाहत की कहानियों में साम्प्रदायिक समस्याओं को उठाते हुए उसके कारणों के उद्घाटन का भी प्रयत्न सफलतापूर्वक किया गया है। ये कहानियाँ सिर्फ अपने रचनाकाल को ही नहीं वरण आज के समसामयिक विडंबनाओं को भी दर्शाती है। जो समकालीन अवस्था में एकदम सार्थक एवं प्रासंगिक है।

संदर्भ–सूची :

1. असगर वजाहत, मेरी प्रिय कहानियाँ, पृ.– 34
2. वही, पृ.– 34
3. असगर वजाहत, मुश्किल काम, पृ.– 57
4. असगर वजाहत, मुश्किल काम, पृ.– 109
5. असगर वजाहत, मैं हिन्दू हूँ, पृ.– 112
6. असगर वजाहत, डेमोक्रेसिया, पृ.– 105